P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-3* November- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महीप सिंह की कहानियों में साम्प्रदायिकता (सन् 1984 के सिख दंगो के विशेष संदर्भ में)

Communalism in Stories of Mahip Singh

(Specially Reference to 1984 Sikh Trouble)

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

भागोती कुमारी जांगिड
प्राध्यापक, **हिन्दी साहित्य स्कूल**
(शिक्षा) शोध छात्रा,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर,राजस्थान,भारत

सारांश

साम्प्रदायिकता किसी भी राष्ट्र के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं हैं। एक समुदाय जब दूसरे समुदाय के लोगों के प्रति धार्मिक, संस्कृतिक या किसी अन्य आधार पर असहिष्णुता की भावना रखता हैं या अपने हितों को राष्ट्रीय हितों से उपर रखता है वहीं सम्प्रदाय का उदय होता है। भारत के सन् 1984 में इंदिरा गाँधी हत्या के बाद भड़के सिख विरोधी दंगे सम्प्रदाय का भयावह रूप था। जिसमें हजारों की जानें गई लाखों को विस्थापित होना पड़ा। अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में इन घटनाओं की यथार्थ और तार्किक अभिव्यक्ति की हैं। सिख सम्प्रदाय से संबंध रखने वाले डॉ. महीप सिंह ने भी अपनी अनेक कहानियों में सन् 84 के दंगों पर विस्तार से अभिव्यक्ति की है।

Communalism is not less than an anathem for a country, when any of the Community keeps intolerance with any other community for such of the topic like as religions cultural etc. Or in other word we can say if any community keep itself superiorthen other community, them its symbol of Communalism Because of above reasons Communalism rises in India after murder of Indira Gandhi in 1984 the Sikhian Tobule was result of it in when a lot of thousands got die and lot less displace

Many of the litterateur realism and logical show about such kind of incident in their life ralepe in order of those. Dr. Mahip Singh who was related form Sikh Communalism also show about 1984 trouble in their various writing.

मुख्य शब्द : साम्प्रदायिक, धर्म, संस्कृति, दंगा, धार्मिक कट्टरता, राजनीति, अमानवीयता, विस्थापित, अत्याचार, पीड़ा, उजड़ना, समाज, नरसंहार, बेकसूर लोग, पीड़ा, हत्या।

Key Words: Communal, Religion culture Riots, Religious fanaticism, politics, Inhumanity, Displaced, murder Case, Torture, Sufferin,. To devastate, Social, massacre, innocent people.

प्रस्तावना

साम्प्रदायिकता मूल रूप से एक राजनीतिक निष्ठा की विचारधारा हैं जो किसी धर्म विशेष के प्रति प्रकट की जाती है। हमारी भारतीय परम्परा में यह विचारधारा नहीं थी क्योंकि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र हैं। जहाँ अनेक भाषा, जाति, धर्म के लोग एक साथ रहते हैं उनके खान–पान, वेश–भूषा और रीति–रिवाज भी भिन्न भिन्न है किन्तु फिर भी अनेकता में एकता की धारणा रखते है।यद्यपि हिन्दुओं की संख्या अधिक है तथापि मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि सभी यहां के नागरिक हैं इन्हें भी हिन्दुओं के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं क्योंकि उनकी जाति, धर्म,रीति–रिवाज सब बाद में और भारतीय पहले हैं। भारत के संविधान में भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है जहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है परंतु कुछ लोगों के स्वार्थ ने धर्म में कटुता और विद्वेश की भावना उत्पन्न कर तनाव व अलगाव की स्थिति पैदा कर साम्प्रदायिकता को जन्म दिया है। 'के.पी. करूणाकर' ने कहा भी हैं कि ''भारत में साम्प्रदायिकता का तात्पर्य उस विचारधारा से हैं जो किसी विशेष धार्मिक समुदाय या जाति के हितों में बढ़ोतरी की पक्षधर थी''।[1]

साम्प्रदायकिता सभी धर्मों और दार्शनिक विचारधाराओं में दर्शाये गए मानवतावाद तथा दयाभाव की शिक्षाओं के विरूद्ध हैं। साम्प्रदायिकता एक ऐसी बूराई हैं जो मानव–मानव के बीच तनाव व अलगाव उत्पन्न कर देश या समाज के टूकड़े–टूकड़े कर देती है। यह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा हैं जो सारे देश के वातावरण को विषाक्त कर देती हैं। साम्प्रदायिकता एक ऐसा पागलपन हैं जो लोगों को मानसिक और अध्यात्मिक दोनों रूपों से अंधा बना देता हैं। यह देश के विकास, स्थिरता, राष्ट्र की सुरक्षा, आपसी मैत्री, गरिमा और देशभक्ति को बहुत क्षति पहुंचाती है।

सम्प्रदाय की नैतिकता इसी में होती हैं कि वह मानव के आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही नैतिक शिक्षा का निर्देश करते हुए सहजीवन, सद्भाव मानवीय मूल्यों का पालन करने की शिक्षा की देता है परंतु आज का स्वार्थी मानव, सम्प्रदाय की वास्तविक व्याख्या को नजरअंदाज कर संकीर्णताओं में बंध गया जिसके चलते अपने धर्म को श्रेष्ठ और अन्य को नीचा दिखाने का प्रयत्न करता है। आज की राजनीति में साम्प्रदायिकता के बढ़ते प्रभाव से राजनेता अपने स्वार्थ के लिए एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से निकृष्ट सिद्ध करते हुए श्रेष्ठता के नाम पर द्वेष की भावना पनपा रहे हैं।

साम्प्रदायिकता की यह आग धर्म से प्रारम्भ होकर राजनीति तक पहुँच गई हैं जिसके कारण यह और भी अधिक खतरनाक बन गई। संसद में राजनीतिज्ञों ने आम जनता में धर्म और संस्कृति की गलत व्याख्या कर धार्मिक उन्माद को बढावा दिया है। इसी विषय पर सन् 1944 में नेहरू जी ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखा था– ''यह एक संकीर्ण मनोवृति हैं जो एक धार्मिक समुदाय को आधार बनाती है परंतु वास्तव में उसका संबंध उस वर्ग विशेष के लिए राजनीतिक सत्ता तथा राजनीतिक संरक्षण से है।साम्प्रदायिकता आर्थिक आवरण के पीछे की राजनीति है जिसमें एक धार्मिक समुदाय से घृणा करने की लिए उकसाया जाता है।''[2] सम्भवतः देश का विभाजन पाकिस्तान का निर्माण भी इसी राजनीति का ही परिणाम था। जब–जब विश्व में धर्म के नाम पर शुद्ध राजनीति हुई है। विश्व में हमेशा ही खून–खराबा हुआ है।

साम्प्रदायिकता की यह आग प्राचीन काल से ही चली आ रही है। अगर देश आजादी के बाद की बात करें तो हमारे देश में अब तक साम्प्रायिकता के नाम पर अनेकों दंगे हुए है। भारत को आजाद कराने में जिन हिन्दू मुसलमानों ने भाइचारे के साथ देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी परन्तु आजादी की बेला पर आपसी संबंध एक न रह सके। दोनों समुदायों ने 1947 में साम्प्रदायकिता के नाम पर भयंकर नरसंहार किया था। हजारों हिन्दू मुसलमानों का कत्लेआम हुआ। लाखों को विस्थापित भी होना पड़ा था। सन् 1947 के बाद 1971 का बांग्लादेश का दंगा, जिसमें भी बड़ी तादाद में नरसंहार हुआ। इसके बाद सन् 1984 का सिख विरोधी दंगा, 1992 का बाबरी मस्जिद दंगा, 2002 के गुजरात दंगे, 2007 उड़ीसा में हुए धर्मांतरण की राजनीतिक दंगे, अभी हाल ही में फरवरी 2020 का दिल्ली दंगा। इन दंगों में लाखों–करोड़ों की जन–धन की क्षति हुई है और हद से ज्यादा अमानवीय कृत्य भी हुए है जिनके सुनने मात्र से रूह तक कांप जाती है।

साम्प्रदायिक दंगे चाहे किसी भी समुदाय के बीच हुए हो परंतु प्रभावित सारा देश, समाज के सभी लोग होते है। समाज का कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहता। ''साम्प्रदायिकता और जातिवाद का विष बड़ा संक्रामक और मारक है। वह दूसरों को परास्त कर, केवल वहीं समाप्त नहीं होता, वरन् धीरे–धीरे फैलकर स्वतः अपने पालने वाले को ही उलटा डस लेता है''[3]

भारत का बंटवारा भारत के इतिहास में ही नहीं पूरे विश्व के इतिहास की एक करूण त्रासद घटना थी और इसके लगभग तीन दशक बाद ही सन् 84 के सिख विरोधी दंगो का भड़कना देश के लिए महान संकट खड़ा होना जैसा ही था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या उन्हीं के दो सिख अंगरक्षको द्वारा करने से पूरे देश को दंगो की आग में धकेल दिया। सभी लोग सिखों को अपराधी की तरह नफरत से देखने लगे। देश में चारों ओर यही नारे गुंजने लगे –''खून के बदले खून'' ''खून की छींटे, सिखों के घर तक पहुँचनी चाहिए''। इस तरह के नारे लगाते हुए दंगाइयों ने देश में चारों ओर मौत कातांडव मचा रखा था। देश की कानून व्यवस्था अराजकता का रूप धारण करने लगी। निर्दोष, बेकसूर, लाचार, बेबस आम लोगों को मौत के घाट उतार दिया, उनकी दूकानों व मकानों को लूटा गया, महिलाओं का बलात्कार और उन्हें बंदी बनाया गया। देश में चारों और खून की होली खेली गई।

सन् 84 की घटना ने समाज एवं साहित्यकारों को भी काफी हद तक प्रभावित किया। हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने अपनी कलम इस सम्प्रदाय संघर्ष पर चलाई जिसमें साठोत्तरी कहानीकार महीप सिंह भी एक है। साम्प्रदायिकता के इस संघर्ष को महीप सिंह ने करीब से देखा भी और भोगा भी। तभी सन् 1984 के दंगो पर महीप सिंह अपनी अनेक कहानियों की पृष्ठभूमि तैयार की जिनमें उन्होंने दंगो से पीड़ित बेकसूर, भयभीत, निराश, विस्थापित परिवारों की पीड़ा आदि को यथार्थता से चित्रित किया हैं। 84 के दंगों पर लिखित इनकी प्रमुख कहानियाँ–एक भरता हुआ दिन, आओ हंसे, डर, शहर, सहमें हुए है।

अध्ययन का उददेश्य

सम्प्रदायिक दंगो से पीड़ित आम जन का चित्रण और इन दंगों के दुष्प्रभावों से पाठको को अवगत करवाना एवं इस दिशा मे ष्वसुधैव कुटुंबकम ष्की भावना का प्रसार करना।

Depiction of human being who suffered from communal riots and apprise the readers with demon of riots and also to transmission the emotion of live together like as "Vasudheva kutumbakam.

साहित्यावलोकन

1. कहानीकार महीप सिंह :संवेदना और शिल्प – डॉ. अजित चव्हाण, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, 2011
2. महीप सिंह की कहानी कला और समकालीन जीवन – डॉ. हनुमन्त दत्तु शेवाळे, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009
3. महीप सिंह का कथा संसार – डॉ. कमलेश सचदेव, 2002

4. ''साठोत्तरी हिन्दी कहानी में कथाकार महीप सिंह का योगदान'' – शगुफ्ता कुरेशी, 2008

एक मरता हुआ दिन' कहानी में साम्प्रदायिक दंगो का स्वरूप

सन् 1984 के दंगो ने सबसे अधिक प्रभावित एवं आतंकित किया पंजाब प्रदेश एवं सिख सम्प्रदाय को जिसे महीप सिंह ने अपनी 'एक मारता हुआ दिन' कहानी में दिखाया है। किसी एक सिख अंगरक्षक द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या गोली चलाकर कर देने से हत्या का अपराधी सारे सिख समुदाय को घोषित कर दिया गया और उसके बाद निरपराध सिखों पर जो कहर ढ़ाया गया वो असहनीय था जिसके जिम्मेदार भी कुछ शासक नेता ही थे जो दंगाइयो को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से इस कृत्य के लिए प्रेरित कर रहे थे। कहानी का नायक हरनाम सिंह हर दिन की तरह सुबह–सुबह उठकर गुरूद्वारे पर मत्था टेकने के लिए जब घर से निकलता है तो वह दिन इंदिरा गांधी की हत्या का दूसरा दिन ही था परंतु जब वह घर से निकला तो हालात सामान्य लग रहे थे और वह यह भी सोच रहा था कि उसका तो इस हत्या से दूर–दूर तक तक कोई संबंध ही नहीं इसलिए उसे इन दंगो से कोई डर नहीं परंतु वह जैसे–जैसे आगे बढ़ता जाता है माहौल सामान्य नही रह जाता है चारों और दहशत महसूस हुई। दंगाइयों की भीड़ उसी के पीछे आ रही थी। और कह रही थी– ''सिखों ने इंदिरा की हत्या कर दी ..... इन्हें इसकी कीमत देनी पड़ेगी..... इन्होंने हमारी माँ को मार डाला..... हम इसका बदला लेकर रहेंगे।''[4] इस प्रकार इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद सिखों को एक तरह से आतंकवादी करार दे दिया था। जिसका दुष्परिणाम आम जन को भोगना पड़ा था। हालात ऐसे थे देश में चारों ओर जहाँ भी कोई सिख दिखाई देता बस एक ही आवाज आती–''सरदार सरदार.....मारो मारो..... ....।''[5] इस प्रकार दंगाइयों ने मानवीय मूल्यों को दरकिनार करते हुए बेबस, बेकसूर सिखों पर केवल उनके सिख होने के नाम पर ही अत्याचार करते रहे। हरनाम सिंह भी इसी कारण दंगाइयों के भेंट चढ़ जाता है पर कुछ लोगो की इंसानियत के कारण उसकी जान बच जाती हैं।

'शहर' कहानी में साम्प्रदायिक दंगो का स्वरूप

'शहर' कहानी में महीप सिंह ने सन् 1984 के दंगों से पीड़ित एवं विस्थापित परिवार की पीड़ा को रेखांकित किया हैं। विस्थापित होना जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है और उस जमीन से जहाँ हमने जन्म लिया, बचपन गुजरा, जहाँ हम आत्मा से जुड़ जाते है जिस परिवेश से हमारा भावात्मक लगाव स्थापित हो जाता है उस जमीन को छोड़ना बहुत ही मुश्किल हो जाता है और यह उस वक्त और भी कठिन हो जाता है जब जीने के लिए जीवन के कुछ वर्ष ही शेष बचे हो। 'शहर' कहानी में अपने परिवेश से उखड़े ऐसे ही एक शापित पात्र भाईसाहब का चित्रण हुआ है जिसे सन् 84 के दंगो के कारण अपने शहर कानपुर को छोड़कर जालंधर में व्यवस्थित होना पड़ता है। गांधी हत्याकांड के बाद कानपुर शहर में दंगाइयों ने सब कुछ तहस–नहस कर दिया था जिसके कारण भाईसाहब और उसका परिवार दूसरे शहर जालंधर में आकर रहने लगते है परिवार के शेष सदस्य तो नये शहर में अपने आप को व्यवस्थित कर लेते है परंतु भाईसाहब इस कोशिश में असफल ही रहते हैं। अपनी हर सांस में बसे शहर (कानपुर) को छोड़ना उन्हें अपनी शरीर से आत्मा को छोड़ना जैसा लग रहा था। परिवार वाले जब उन्हें पूराने शहर से अपने आप को समेटने या लगाव को कम करने की सलाह देते हैं तो भाईसाहब अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहते है –''अब तो होड सी लगी दिखती हैं – मैं अपने आप को उस शहर में समेटता हूँ या वक्त मुझे समेटता है।''[6] अपनी जमीन से उखड़ना जीवन से उखड़ने जैसा है। खून पसिने से सिंची गई जमीन को छोड़कर जीना शापित जिंदगी जीने जैसा ही है जिसे महीप सिंह ने भाईसाहब के माध्यम से उद्घाटित किया है।

दिन' कहानी में साम्प्रदायिक दंगो का स्वरूप

'दिन' कहानी में महीप सिंह ने दंगो से पीड़ित बुजुर्ग दम्पति बच्चन सिंह और बच्चन कौर का संवेदनशील चित्रण किया है। वो अपने शहर में सुख पूर्वक रह रहे थे पर 84 के दंगो के दौरान उनका घर लुटा लिया, दूकान जला दी जिसके कारण बड़े दुःखी भी है। ''दंगाई सारे दिन उनके घर को घेरे रात को अंधेरे में घर के सभी प्राणी पिछवाड़े रहने वाले पड़ोसी की छत पर कूद–कूदकर पहुंचे और सारी रात हर सांस के साथ यहां महसूस करते रहे कि घर व एक चीज लोग उपहार में किसी वस्तु की तरह बड़े आराम से ले जा रहे है। अपना मकान फिर से एक सपना बन गया। किराये की छत के नीचे सिर छुपाना ही जिन्दा रहने की शर्त बन गया।''[7] इस प्रकार दंगाइयों के अत्याचार से बचने का आम जन के पास बस एक ही उपाय था पलायन करना। बच्चन सिंह का परिवार भी पलायन कर जाता है और बिखर जाता है। बच्चन सिंह जैसे परिवार का इन दंगो से कोई सरोकार नहीं था परंतु फिर भी साम्प्रदायिक राजनीति के शिकार हुए और दुष्परिणाम झेलने पड़े।

आओ हँसें' कहानी में साम्प्रदायिक दंगो का स्वरूप

एक बार उजड़कर बसे लोग उजड़ने की पीड़ा से भली भांति परिचित हो जाते है वे फिर से उजड़ने की चाह नहीं रखते परंतु विपरीत परिस्थितियों के होने पर उन्हें एक बार फिर से उजड़ना पड़े तो वह पीड़ा असहनीय बन जाती है। 'आओ हँसें' कहानी सिख परिवार के 1984 के दंगो के दौरान फिर से उजड़ने से भयभीत, पीड़ित परिवार का चित्रण हुआ है। कहानी में एक सिख परिवार देश आजादी के दौरान हुए दंगो में उजड़ जाता है और जब 1984 के दंगे भड़कते है तो वह अपने अतीत को याद करते हुए दुःखी होता है उसे लगता है अब एक बार से फिर बिछड़ना होगा। कहानी का पात्र नानक अपनी संवेदना इस प्रकार व्यक्त करता है ''क्या पता की इस जीवन में एक बार फिर से उजड़ना पड़ेगा।''जो लोग उजड़ने की पीड़ा एक बार देश आजादी के समय भोग चुके थे उन्हें इंदिरा गाँधी हत्याकांड से भड़के दंगो ने फिर उजड़ने के नाम पर भयभीत बना दिया था।

सहमें हुए' कहानी में साम्प्रदायिक दंगो का स्वरूप

साम्प्रदायिक दंगो में समाज का कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहता जिसे महीप सिंह की सहमें हुए कहानी में महसूस किया जा सकता है। कहानी के प्रमुख चारों

पात्र अलग–अलग धर्म के हैं (शर्मा–हिन्दू, हाशमी–मुसलमान, हरजी–सिख, लाबों–ईसाई) परंतु चारों में एकता भी हैं लेकिन यह एकता, प्रेम, मित्रता में उस वक्त खिंचाव आ जाता है जब देश में चारों और साम्प्रदायिक दंगे भड़कते है। इस कहानी में महीप सिंह से सन् 1984 मे हुए दंगो के कई यथार्थ चित्र प्रस्तुत किए है। इसाई पात्र 'लोबों' का यह कथन उन दंगो की वास्तविकता से अवगत करवा रहा है।''यार हिन्दू–मूसलमानों के दंगो में हम ईसाइयों की बड़ी मुसीबत होती हैं। मुसलमान हमें हिन्दू समझकर छूरा भोंक देता है और हिन्दू हमें मुसलमान समझकर गर्दन काट देता हैं। जब तक हम बताए कि हम क्या है पेट चाक हो चुका होता है। हमें तो शाला कुछ दिखानें का मौका भी नहीं मिलता है।''[9] लोबों का यह कथन उस समय के दंगाईयों की निर्दयता को उजागर कर रहा है। इस सम्प्रदाय की आग में, किसी भी धर्म या वर्ग का कोई भी अछूता नहीं रहता। दंगो का एक और उदाहरण द्रष्टव्य है– ''कल अलीगढ़ में दंगाई एक मकान में घुस गए। घर पर उस समय एक बूढ़ा था– सत्तर साल का और एक लड़की थी आठ साल की। दंगाईयों ने चाकू से गोद कर मार डाला।''[10] इस प्रकार इन दंगो में दंगाइयों की अमानवीयता का शिकार समाज के सभी बच्चे, बुढ़े और स्त्रियाँभी हुई जिनका इन दंगो से दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं था।

साम्प्रदायिकता की जड़े कट्टर धार्मिक तो है ही इसके साथ ही इसका संबंध राजनीतिक सत्ता से भी गहरा है जिसके कारण देश में साम्प्रदायिकता की आग बढ़ रही है। देश आजाद हो गया, विभाजन भी हो गया पाकिस्तान अस्तित्व में आया वो भी आजाद हो गया पर इंसान आज भी गुलाम है। कोई साम्प्रदायिकता का, कोई धार्मिक पागलपन का तो कोई पशुता, अत्याचार का गुलाम है। भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित है परन्तु फिर भी कुछ असामाजिकतत्व देश में धर्म के नाम पर अशांति फैलाते रहे है। सन् 1947 का हिन्दू मुसलमानों के दंगों का कारण धर्म से ज्यादा कुछ लोगों का राजनीतिक स्वार्थ ही था और कुछ वर्षों बाद सन् 1984 के दंगे भी इसी राजनीतिक स्वार्थ का दुष्परिणाम रहा है जिसमें लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी, घर से बेघर होना पड़ा। जिसका चित्रण कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य में किया है पर चित्रण करने मात्र से ही यह समस्या सुलझने वाली नहीं है। हम सभी को इस दिशा में सुधार के प्रयास करने होंगे तभी देश को इस खतरनाक आग से बचा सकते है।

साम्प्रदायिकता की आग ऐसी आग है जो थोड़ी सी हवा पाकर भड़क उठती है और जिसकी लपटो में वे तो जलते ही है जिनके लिए प्रज्ज्वलित की जाती है साथ वे बेकसूर, निर्दोष, लोग भी झुलस जाते है जिनका इन से कोई संबंध ही नहीं होता है। सन् 1984 के दंगो में ऐसा ही हुआ था कई निर्दोष लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था।

धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा के विषय में महीप सिंह कहते है कि कोई धर्म पाप, हिंसा अत्याचार की शिक्षा नहीं देता, वह प्रेम, विश्वास, भाईचारे, सहयोग की भावना का ही संदेश देता है परंतु जब तक देश में धर्म और राजनीति का उपयोग स्वार्थ की भावना से होता रहेगा तब तक भारतीय लोकतंत्र साम्प्रदायिक विषबेल से छुटकारा नही पा सकेगा। हमें धार्मिक कट्टरता के स्थान पर धार्मिक सद्भाव पर जोर देना है। देश की पुरानी धारणा'वसुधैव कुटुम्बकम' को सभी देशवासियों को आत्मसात करना होगा साथ ही शासक कर्ता को भी अपने दायित्वों का पालन ईमानदारी से करते हुए नीतिगत धर्म और धर्म प्रद राजनीति का अनुगमन कर विश्व शांति में योगदान देना होगा। नेताओं को अपनी संकीर्ण मनोवृति को त्यागकर राष्ट्रनिर्माण की ओर ध्यान देना चाहिए साथ ही समाज के बुद्धिजीवी वर्ग और धार्मिक नेताओं के सहयोग से भी इस साम्प्रदायिकता की समस्या से निजात पाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता– विपिन चन्द्र पृ.1*
2. *आधुनिक भारत में विचारधारा और राजनीति – विपिन चन्द्र पृ.69*
3. *भारतीय स्वतंत्रता और हिन्दी उपन्यास– शशिभूषण सिंहल पृ.71*
4. *एक भरता हुआ दिन, संबंधों का सन्नाटा – डॉ. महीप सिंह पृ.132*
5. *एक भरता हुआ दिन, संबंधों का सन्नाटा – डॉ. महीप सिंह पृ.133*
6. *शहर, संबंधों का सन्नाटा–महीप सिंह पृ.170*
7. *दिन, संबंधो का सन्नाटा – डॉ. महीप सिंह पृ.277*
8. *आओ हंसे,संबंधों का सन्नाटा – महीप सिह पृ.146*
9. *सहमें हुए,संबंधों का सन्नाटा – डॉ. महीप सिंह पृ.92*
10. *सहमें हुए,संबंधों का सन्नाटा – डॉ. महीप सिंह पृ.93*